आरएनआई नं. . RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. . RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस, उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2578 • उदयपुर, शनिवार 15 जनवरी, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

बढ़ चले थमे पांव

मथुरा निवासी केशव शर्मा (20) ने आईटीआई उत्तीर्ण कर शहर में ही कम्प्यूटर सुधार का काम शुरू किया। माता संतोष गृहिणी हैं, जबकि पिता विनोद शर्मा एक मसाला फैक्ट्री में काम करते हैं। केशव करीब तीन वर्ष पहले मथुरा के स्टेट बैंक चौराहा से बाइक पर घर लौट रहे थे कि सामने से आते एक ट्रैक्टर से भिड़ंत हो गई। जिससे बाए पांव में फैक्चर हो गया। नजदीकी हॉस्पीटल में प्राथमिक उपचार के बाद दिल्ली में करीब 6–7 ऑपरेशन हुए किन्तु पांव ठीक नहीं हो सका। डॉक्टरों के अनुसार पांव की नसें काफी क्षतिग्रस्त हो गई थी।

उन्होंने पांव को काटने की सलाह दी लेकिन परिवार ने तब ऐसा करना उचित नहीं समझा। मथुरा आने के बाद केशव की हालत और बिगड़ गई और यही के एक अस्पताल में अनतोतगत्वा डॉक्टरों की सलाह पर पांव को कटवाना ही पड़ा। पांव काटने से जिन्दगी मानों ठहर–सी गई। काम काज सब छूट गया। इलाज में परिवार की आर्थिक स्थिति भी खराब हो गई। परिचितों ने कृत्रिम पांव लगवाने की सलाह दी किन्तु आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण यह सम्भव नहीं हुआ।

कुछ समय बाद नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर में निःशुल्क कृत्रिम अंग लगाने की टी.वी. पर सूचना देखकर पिता के साथ नवम्बर 2021 के द्वितीय सप्ताह में उदयपुर आए जहां उनके कृत्रिम पांव लगाया गया। अब वे बिना सहारे खड़े भी होते हैं और चलते भी हैं।

सुगम हुआ अनोखी का जीवन

व्यक्ति की जिन्दगी में जब सब कुछ ठीक–ठाक चल रहा होता है और वह अपनी गृहस्थी को लेकर सपने बुनता है, अनायास कोई घटना उसके सपनों को छिन्न–भिन्न कर देती है। ऐसी स्थिति में जो निराश होकर भी हौसले से काम लेते हैं,उन्हें कोई न कोई सम्बल मिल ही जाता है। राजस्थान के धौलपुर जिले के मलक पाड़ा–बाड़ी गांव के विवेक गर्ग के साथ कुछ ऐसा ही हुआ कि उनकी गृहस्थी आंसूओं में डूब गई। उनके घर में जल्दी ही पहली संतान आने की खुशी थी। 18 सितम्बर, 2013 को घर में लक्ष्मी आने की जो खुशी मिली कुछ ही पलों बाद वह काफूर हो गई।

नवजात बच्ची का दायां पांव टखने की हड्डियों में विकृति के कारण मुड़ा हुआ, जबकि बांए हाथ का पंजा भी अंगूठे और उंगलियों में विकृति लिए हुए था। बालिका का नाम अनोखी रखा गया। जब वह एक साल की हुई तो उसे गोदी में ही उठाकर इधर–उधर ले जाना पड़ता था। चार वर्ष की होने पर उसे स्कूल में दाखिल तो करवा दिया गया लेकिन गोदी में ही उसे लाना ले जाना पड़ता था। इस दौरान माता–पिता को मजदूरी और घर के कामों में परेशानी का सामना करना पड़ा। दो–तीन साल बाद घर में दूसरी बच्ची ने जन्म लिया, जो एकदम सामान्य थी। अनोखी को इलाज के लिए जयपुर भी ले जाया गया लेकिन कोई लाभ नहीं मिला। इस बीच इन्हें इस तरह के दिव्यांग बच्चों के निःशुल्क इलाज के लिए नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के बारे में सूचना मिली। सन् 2017 में चार वर्ष की अनोखी को लेकर माता–पिता नीतू–विवेक गर्ग उदयपुर आए। जहां डॉक्टरों ने परीक्षण कर उसके लिए विशेष कैलिपर बनाया। जिसके सहारे अनोखी अब थोड़ा चलती भी है और खुश है।

अब उम्र बढ़ने के साथ तीसरी में पढ़ने वाली 9 साल की अनोखी के लिए अक्टूम्बर, 2021 में कैलिपर बदला गया है।

एक कदम अध्यात्म की ओर

संसार में दो प्रकार के पेड़ पौधे होते हैं' प्रथम अपना फल स्वयं दे देते हैं,' जैसे–आम, अमरुद, केला इत्यादि' द्वितीय अपना फल छिपाकर रखते हैं,' जैसे–आलू, अदरक, प्याज इत्यादि' जो अपना फल अपने आप दे देते हैं, उन वृक्षों को सभी खाद–पानी देकर सुरक्षित रखते हैं, किन्तु जो अपना फल छिपाकर रखते है, वे जड़ सहित खोद लिए जाते हैं जो जीव अपनी विद्या, धन, शक्ति स्वयं ही समाज सेवा में समाज के उत्थान में लगा देते हैं, उनका सभी ध्यान रखते हैं अर्थात् मान–सम्मान देते है। वही दूसरी ओर जो अपनी विद्या, धन, शक्ति स्वार्थवश छिपाकर रखते हैं, किसी की सहायता से मुख मोड़े रखते है, वे जड़ सहित खोद लिए जाते है अर्थात् समय रहते ही भुला दिये जाते हैं।

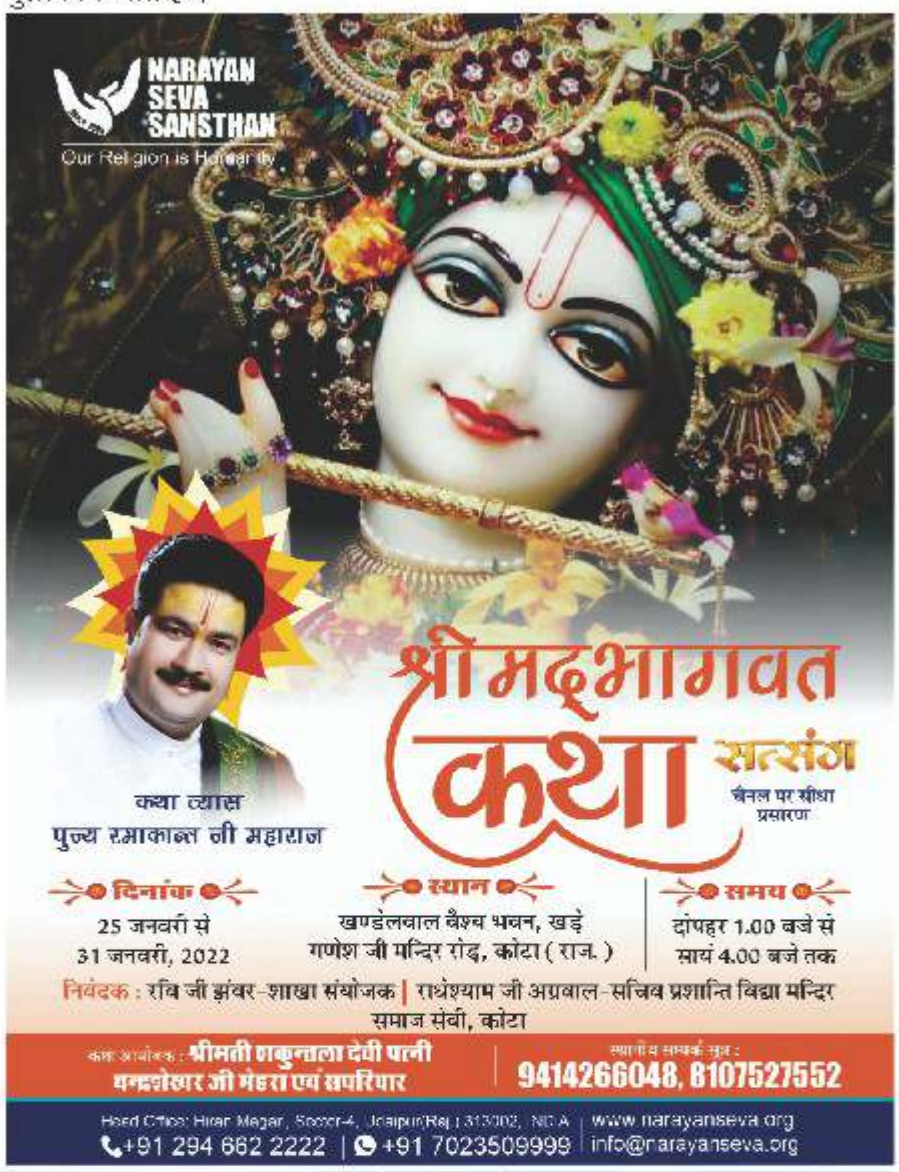

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

एक वकील ऑफिस में बैठा, वारंट कट गियो। और एक सेठ री कलम कान पे टंगी रेइगी। पधार गया ऊपर। राम राम सत्य है। सत्य के साथ गत है। रोज वेई रियो भाईसाहब। रोज वेई रियो अखबार रो पानो, अखबार पढ़ो तो एक सन्देश, शोक सन्देश रोज आवे। ईको तैरहवो अणी दन है, ईको ऊठावणो अणी दन है। ईकी मृत्यु अतरी बजा वेईगी। इसका अन्तिम संस्कार।

आपणाई ये ही हाल है।
अमर वेईन कोई नी आया।
अमर तो हनुमान जी वीया।
अजर–अमर गुण निधि सुत होहू,
करहिं सदा रघुनायक छोहू।

हनुमान जी भी सत्संग सुन रहे हैं। हनुमान जी, जहाँ भी सत्संग होता है हनुमान जी की कृपा हो जाती है। हनुमान जी की कृपा से ही आपी बोल पा रीया हाँ।

छम छम नाचे देखो वीर हनुमाना।
कहते है लोग इन्हें, राम का दिवाना।।

तो आपणे उत्साह राखणो।
सीतामाता जी के मन में भाव पक्ष। भाव भी अच्छे, सीतामाता जी बड़ी प्रसन्न। हर समय प्रसन्न रहती थी। हाँ, कौशल्या माता जी,

सास चाहती थी जब जो।
देती थी उनको तब त्यों।।

अब उसी समय प्रभु रामचन्द्रजी भैया।

उसी समय अनुज सहित।
पहुँचे वहाँ विकार रहित।।

विकार रहित, प्रभु ने लीला की है।

सेवा - स्मृति के क्षण

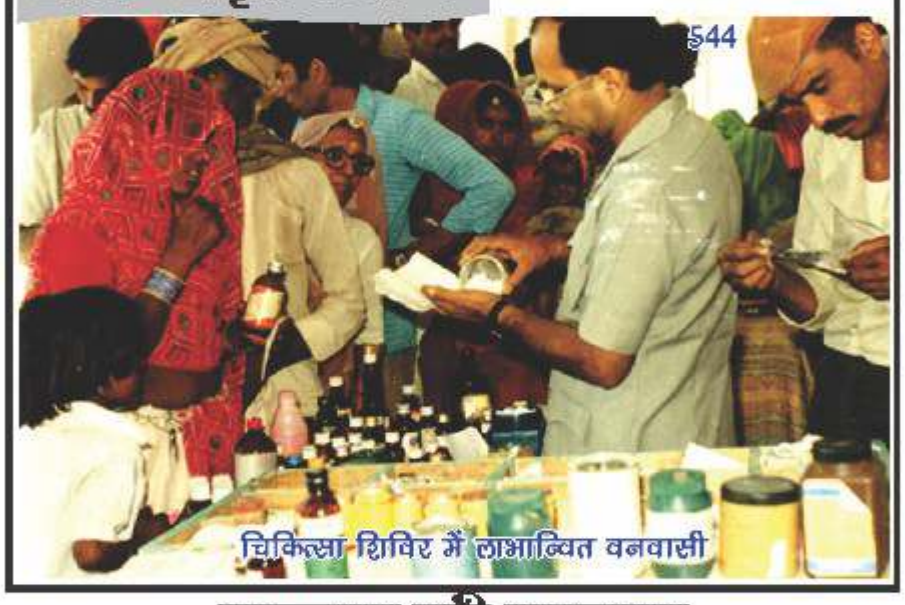

सज्जन की पहचान

एक बार धर्म और अधर्म दोनों अपने– अपने रथ में बैठकर कहीं जा रहे थे। तभी उन दोनों के रथ एक ही राह में आमने–सामने खड़े हो गए। अब कौन दूसरे के लिए रास्ता छोड़े, इस पर उनमें विवाद छिड़ गया। धर्म ने अधर्म से कहा–"भाई! तू अधर्म है, मैं धर्म हूँ। मेरा मार्ग ठीक होता है। मैं पुण्यदायक सभी के द्वारा पूजित व प्रशंसित हूँ, इसलिए मार्ग दिए जाने योग्य मैं ही कहा जा सकता हूँ।"

अधर्म बोला–"हे धर्म! मैं अधर्म हूँ और मार्ग दिए जाने योग्य मैं ही हूँ।" अधर्म आगे बोला–"हे धर्म! मैं अधर्म हूँ और निर्भयी व बलवान हूँ। मैंने आज तक कभी भी किसी को मार्ग नहीं दिया। यह मेरे स्वभाव के विरूद्ध है। मैं तुझे मार्ग कैसे दे सकता हूँ?"

धर्म ने फिर समझाया–"देखो भाई! लोक में पहले धर्म का प्रादुर्भाव हुआ, बाद में अधर्म का। धर्म ही ज्येष्ठ है, धर्म ही श्रेष्ठ है, धर्म ही सनातन है। इसलिए है कनिष्ठ! तू मुझ ज्येष्ठ के लिए मार्ग छोड़ दे।" इस पर अधर्म बोला– "ये सब कोई उचित कारण नहीं है आओ, युद्ध करें। जिसकी जीत हो, रास्ता उसी का।" फिर धर्म ने सुलझाने की कोशिश की–"मैं चारों दिशाओं में फैला हुआ महाबलवान, यशस्वी व अतुलनीय गुणवान हूँ। तू मुझसे कैसे जीतेगा?"

अधर्म बोला–"लोहे से सोना पिघलता है, सोने से लोहा नहीं। आज अधर्म ही धर्म को पराजित करेगा।" यह सुनकर धर्म बड़ा दुखी हो गया। धर्म ने कहा–"मैं युद्ध नहीं करना चाहता। मैं तेरे वचनों के लिए तुझे क्षमा करते हुए जाने का मार्ग देता हूँ।" सज्जन लोगों की यही पहचान होती है।

सम्पादकीय

नीति साहित्य में संस्कृत का एक श्लोक है– 'उद्यमेन हि सिद्यन्ति, कार्याणि न मनोरथैः।' अर्थात् किसी भी कार्य को करने के लिये केवल विचार कर लेना ही पर्याप्त नहीं है वरन् उसके लिए प्रयास भी करना होता है। सही ही है। हम प्रतिदिन न जाने कितने मंसूबे गढ़ते हैं, ये कर लें, वो कर लें। पर वे मनोरथ हमारे मन में ही दम तोड़ देते हैं तथा कार्य की सिद्धि नहीं हो पाती। इसका मूल सिद्धान्त यही है कि कार्य की पूर्णता के लिये विचार, मंसूबा या मनोरथ प्राथमिक चरण है। पर केवल एक चरण बढ़ाने से चलना कैसे संभव हैं? जब तक दूसरा चरण आगे नहीं बढ़ेगा, तब तक गति कैसे होगी ? गत्यात्मकता के लिए दोनों चरणों का क्रियाशील होना आवश्यक होता है। वैसे ही मनोरथ करने के साथ प्रयास करना ही दूसरा चरण बढ़ाना है। इन दोनों की जुगलबंदी ही हमें कहीं पर ले जा सकती है।

कुछ काव्यमय

सपने देखना अच्छा है
पर केवल सपनों से
किसका उद्धार हुआ है ?
सपनों के साथ
मिलाने पड़ते हैं कदम
तभी फलीभूत होती
सफलता की दुआ है।

- बसीचन्द राव

सलाम है इनको

हमारी आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी नहीं थी कि, मम्मी हमे अच्छे से अच्छे स्कूल में पढ़ा सके। लेकिन फिर भी मम्मी ने हमारे लिये बहुत कुछ किया। लोग सोचते हैं कि बेटा ही सबकुछ कर सकता है, बेटिया क्यों नहीं कर सकती ? बेटिया भी आगे बढ़ सकती हैं।

पूजा ने इसी जज्बे और जूनुन के साथ नारायण सेवा संस्थान से निःशुल्क 45 दिन का कम्प्युटर कोर्स प्रारम्भ किया। वो कहती हैं मैंने नारायण सेवा संस्थान से कम्प्युटर कोर्स किया जिसमें बेसिक हिन्दी, इग्लिश टाईपिंग की। उसके बाद मैंने एडवांस कोर्स भी किया जिससे मैं आज अच्छी जॉब कर रही हूँ और पांच हजार रुपये महीना का कमा लेती हूँ। बेटी हूँ तो मैं अपनी माँ के लिए सबकुछ करूंगी जो बेटा करता है। मैं मेरी मम्मी से वादा करती हूँ कि मैं उन्हें अच्छी से अच्छी कम्प्युटर इंजीनियर बनकर दिखाउंगी। मैं नारायण सेवा का दिल से धन्यवाद करना चाहती हूँ। पूजा की जिंदादिली और जज्बे को सलाम।

अपनों से अपनी बात

नेकी से करें समाज का विकास

पकड़ने के लिए दौड़ पड़े–सब पीछे! कसूर! कसूर क्या है? उसका। पकड़ो–पकड़ो की आवाज के आगे दौड़ रहा था। मटमैले कपड़े में लिपटा–झर्झर शरीर।

आखिर उसे पकड़ ही लिया पीछे दौड़ रहे दो–चार व्यक्तियों के मजबूत बाजुओं ने। एक ने तो थप्पड़ भी रसीद कर दिया। वो रोने लगा चिल्लाया– मुझे मत मारो, रास्ते जा रहे एक भल–मानुस ने बीच बचाव किया– पूछा आक्रोशित व्यक्तियों को एक बोला– इसने चुराया है, क्या चुराया है? राहगीर बोला।

गुस्साया दल नहीं बता रहा था कि "चुराया क्या है"? बार–बार पूछने पर उस चोर ने ही बोला– बोलते क्यों नहीं? बताते क्यों नहीं? मैंने चुराया क्या है? असभ्य बनकर मेरे पीछे दौड़ पड़े वो भी लेने को "एक रोटी"। भला मानुस बोला– "रोटी"? हाँ–हाँ रोटी, रोटी पापी पेट के लिए चुरायी मैंने रोटी जब ये उसके कुत्ते को प्यार से डाल रहे थे– रोटी तब मेरी भूखा ने ईर्ष्या की –कुत्ते से भूख रोक नही पायी– मेरी नीयत को और चुरा ली "बेचारे कुत्ते से रोटी।" राहगीर उन व्यक्तियों को चिक्कारता हुआ चला गया। वे व्यक्ति भी क्षमा मांगने के बजाय गुर्राते हुए चल पड़े। वो गरीब बेचारा सड़क पर बैठ गया रोने के लिए आज के सभ्य समाज में इंसान इंसान का कुत्ते से भी कम आकलन करें तो क्या होगा?

हम आप से ही पूछ रहे हैं आखिर

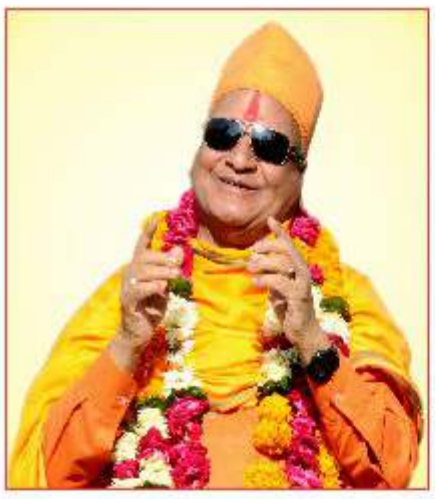

कसूर क्या था? सिर्फ भूख और कुत्ते से चुरायी रोटी हम में वो "मानवीयता" होनी चाहिए– अगर किसी दीन–दुःखी को आवश्यकता है सहारे की और हम उसे देवें। सहयोग दो तो इस धरती पर जीवन जीने का आयेगा मजा वरना हम भी उसी भीड़ के हिस्से हो जायेंगे जो मरकर भी अपने नाम की तरंगे नहीं छोड़ जाते।

आवश्यकता से अधिक यदि प्रभु ने हमें दिया तो निश्चित वो ईश्वर आपके माध्यम से गरीबों, असहायों विकलांगों के लिए नेक कार्य करवाना चाहता है –यदि ऐसा न हो तो हम भी तो उस गरीब व्यक्ति की तरह हो सकते थे।

हमारे पूर्व जन्म का पुण्य हमें– नेक व धन– धान्य पूर्ण कर रहा है। हमारा कुछ धन नेकी में डालें, ताकि व्यक्ति समाज व देश–विकास की ओर बढ़े।

–कैलाश 'मानव'

परमात्मा सबका ध्यान रखते हैं

आप और हम–सब ने सुना है, समझा है कि भगवान जो है वो हर समय अपने शिष्य का, अपने बच्चे का, अपने अंश का, हर प्राणी का 84 लाख योनियों में भटक रहे जीवन जी रहे हर प्राणी, हर जीव का ध्यान रखता है।

एक व्यक्ति था वो नींद में था। नींद आ रही थी–उसे, और उसे सपना आया बहुत सुन्दर, उसने देखा कि वो समुन्दर के किनारे दौड़ रहा है। सुबह–सुबह मोर्निंग वॉक कर रहा है। और उसके साथ में भगवान जी भी दौड़ रहे है। वो और भगवान दोनों दौड़ रहे हैं। नीचे देखा उसमें चार पैर हैं। दो उसके, दो भगवान के हैं। वो बहुत सुखी जीवन हैं उस सुख के जीवन में वो बहुत आनन्द ले रहा है। और भगवान जी भी उसके साथ दौड़ रहें हैं। कुछ समय बाद उस पर दुःख आता हैं। दुःख के क्षणों में भी वो समुन्दर किनारे आता है। और चलने लगता है। तो देखता है कि वो दो पैर गायब हो गए हैं। भगवान जी के दो पैर जो नजर आते थे, वो हैं नहीं। दो पैर से मैं दौड़ रहा हूँ। उनको बहुत बुरा लगता है।

वो व्यक्ति सोचता है कि भगवान ने दुःख में मुझे अकेला छोड़ दिया। जब सुख था तब वो साथ में दौड़ रहे थे। लेकिन आज मैं अकेला दौड़ रहा हूँ। मन ही मन परमात्मा से कहता है। परमात्मा बहुत गलत किया–आपने। जब भी मेरे पर दुःख आता है आप मुझे अकेला छोड़ देते हैं। परमात्मा ने बहुत सुन्दर कहा। परमात्मा ने कहा कि बेटा मैंने तुझे अकेला नहीं छोड़ा। मैं तो दुःख में सदैव तेरे साथ हूँ। तो बोले, वो दो पैर कहाँ चले गए? आपके अभी तो दो पैर नजर नहीं आ रहे हैं। भगवान बोले बेटा वो दो पैर मेरे ही हैं। वो तेरे नहीं हैं। मैं तुझे गोद में उठाकर चल रहा हूँ। कितनी सुन्दर बात है। भगवान उसे गोद में उठाकर उसको दुःखों से निजात दिलाने के लिए स्वयं तकलीफ पा लेते हैं। और उस बच्चे को, उस प्राणी को, उस जीव को, उस अंश को दुःखों से पार ले जाते हैं। लेकिन उसमें हिम्मत स्वयं की बहुत जरूरी है।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

थोड़ा आगे बढ़े तो वहां से खच्चर लेने थे। यहां एक और व्यक्ति ने उसका नाम पुकारा तो वह समझ गया कि जरूर टी.वी. प्रशंसक है। उसने आकर चरण स्पर्श किये और बताया टी.वी. पर कार्यक्रम रोज देखता है। कैलाश मन ही मन प्रसन्न हो रहा था। थोड़ा आगे बढ़े तो एक जगह बैठ कर चाय पीने लगे। वहां एक महाराज बैठे थे, उनसे बातचीत होने लगी तो कैलाश पूछ बैठा– आप सन्त कैसे बन गये? महाराज एक क्षण तो कैलाश के इस प्रश्न से चकित रह गये फिर बोले– मैंने किसी को कष्ट दिया, धोखा दिया, उसने इसका बदला लिया, मुझे ज्यादा कष्ट दे दिया, मुझे वैराग्य हो गया, अब अपनी गलतियों की सजा भुगत रहा हूँ। कैलाश महाराज की अपनी गलतियों की इस बेबाकी से स्वीकारोक्ति पर हैरान था।

आगे बढ़े तो एक और टी.वी. से पहचानने वाला व्यक्ति मिल गया। कैलाश को जो रोज दूर दूर से चेक, ड्राफ्ट, मनीआर्डर मिलते थे उससे टी.वी. की शक्ति का परिचय तो मिलता ही था मगर यहां इतने लोगों द्वारा उसे पहचाने जाने से टी.वी. की एक अलग तरह की शक्ति का भी परिचय मिल रहा था। इस व्यक्ति ने एक भोजपत्र की लकड़ी लाकर भेंट की। यह बेंत जैसी थी जिससे प्याज के छिलके की तरह भोजपत्र उतरते जाते थे, इन्हें ही सूखा कर उन पर लिखा जाता था। एक अनजान व्यक्ति द्वारा इस तरह का उपहार पाकर कैलाश को थोड़ा असहज लगा, उसने उसे भोजपत्र का मूल्य देने का प्रयास किया मगर वो नहीं माना।

अंग - 209

जामुन खाइये, रोग भगाइये

जामुन यह आकार में तो काफी छोटा है लेकिन गुणों से भरपूर होता है। यह हमारे संपूर्ण स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है साथ ही अनेक रोगों में औषधि का भी काम करता है।

नीले रंग का फल जामुन आयरन, विटामिन, फाइबर और खनिजों से भरपूर होता है। इसलिए यह हमारे पेट, स्वास्थ्य और सौन्दर्य के लिए सम्पूर्ण टॉनिक है। इसलिए अन्य फलों के अलावा आप जामुन को भी तरजीह दें और इसके भरपूर लाभ प्राप्त करें।

- मुंह के छाले ठीक करने के लिए जामुन की नई पत्तियां (कोपल) पान की भांति चबाई जाती रही हैं।
- दाढ–दांत, मसूढ़ों में दर्द की स्थिति में जामुन के पेड़ की छाल को पानी में खूब उबालकर उस पानी से कुल्ला करने पर लाभ होता है।
- गांव में लोग आज भी जामुन का सिरका बनाकर रखते हैं। यह पेट के रोगों के लिए लाभदायक है। खाने के साथ थोड़ा सा सिरका लेने से भोजन आसानी से पचता है और पाचनतंत्र सुदृढ़ होता है।
- जामुन और आम का जूस समान मात्रा में मिलाकर पीने से मधुमेह में लाभ होता है।
- जामुन के पेड़ की छाल उबालकर पानी का लेप घुटनों पर लगाने से गठिया में लाभ होता है।
- विषैले जंतुओं के काटने पर जामुन की पत्तियों का रस पिलाना चाहिए।
- जामुन का रस, शहद, आंवले या गुलाब के फूल का रस बराबर मात्रा में मिला कर एक–दो माह तक प्रति दिन सुबह के वक्त सेवन करने से रक्त की कमी दूर होती है।
- जामुन की गुठली चिकित्सा की दृष्टि से काफी उपयोगी मानी गयी है। इसकी गुठली के अंदर की गिरी में जंबोलीन नामक ग्लूकोसाइट पाया जाता है। मधुमेह के नियंत्रण में यह काफी सहायक है। गुठली सूखाकर पीसकर रख लें। एक–एक चम्मच सुबह–दोपहर–शाम पानी के साथ सेवन करें।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

मैं नही मेरा नही ये तन किसी का है दिया, जो भी अपने पास है वह धन किसी का है दिया, और ये अलसीगढ़ के पहले की यात्रा का महान क्रम और फिर अलसीगढ़ प्रवेश किया, उसके पूर्व हमारे भैया फलासिया से बूझड़ा। फलासिया दिनाँक 30 मार्च 1986 रोगी सेवा 513 अन्य सेवा 1725 बूझड़ा 6 अप्रेल 1986 रोगी सेवा 213 अन्य सेवा 1125 और अलसीगढ़ में जब प्रवेश किया एक इतिहास बन गया।

बेला अमृत गया, आलसी सो रहा।
बन अभागा, साथी सारेजगे तूं न जागा।।
हंस का रूप था, गंदला पानी पिया, बनके कागा।
साथी सारे जगे, तूं न जागा।।

हाँ, महाराज ये तीन अक्षर का नाम, साढ़े तीन अक्षर का सरनेम। क्या ये शरीर हैं? क्या ये 206 हड्डियाँ हैं? क्या लार नाम की ग्रंथि हैं? पिटियुटरी ग्रंथि से जो ग्रन्थियों का राजा है, इससे कुछ स्त्राव नहीं होता हैं? अन्य कई ग्रन्थियों से स्त्राव होता है। पिटियुटरी ग्रन्थी इनका नियंत्रण करती है। क्या यह कैलाश है? क्या ये, नख क्या? ये बाल क्या? ये कद? छोटी आँत? बड़ी आँत? ये फेफड़े दोनों? ये हृदय? ये दोनों किडनियाँ? ये हाथ पैरों की अंगुलियाँ? क्या ये कैलाश है? किसको कैलाश कहें? हड्डियों को? मांस को? नसों को? धमनियों को? शिराओं को? न्यूरो की धाराओं को? कैलाश कुछ नहीं। ये प्रकृति करवा रही है–माया। जो प्रकृति के वश में हो कर के पृथ्वी अपने समस्त भारों को लेती हुई। नदी, तालाब, समुद्र, और सरोवर कंटिली झाड़ियाँ हजारों लाखों वृक्ष उन सबको साथ लेके चलती हुई सुर्य के चारों ओर चक्कर लगा रही है। जिस आकर्षण शक्ति से ओर आकर्षण शक्ति भी लय वाली, उसी अक्षांश पे पृथ्वी चक्कर लगा रही है।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 336 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक. कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से 4, उदयपुर (राज) स्वामित्व. नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल. ई, डी-71 बापा रावल नगर, हिरण मगरी सेक्टर-6, उदयपुर मुद्रक: न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर -3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियों का गुडा, उदयपुर
सम्पादक: लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल: mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं.. RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. RJ/UD/29-154/2021-2023